# भारतीय सैन्य बलों का शैक्षिक सशक्तीकरणः इग्नू का एक केस अध्ययन

मधुलिका श्रीवास्तव, नविता अब्रॉल, शेखर सुमन
*इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत*

**सारांशः** अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करते ही, सैनिक जब सैन्य बल का हिस्सा बन जाते हैं तो उन्हें 35 से 45 वर्ष की आयु में अपनी सेवा निवृत्ति का भलीभांति पता होता है, जबकि यह ऐसी आयु मानी जाती है जब सामाजिक एवं वैयक्तिक जिम्मेदारियों का वेग काफी प्रचंड किस्म का होता है और ऐसी उम्र पर पहुँच कर, दूसरे रोजगार की ओर देखना, एक विकट स्थिति होती है क्योंकि ऐसे रोजगार का भरोसा नहीं होता। जबकि ऐसी उम्र में सेवानिवृत्ति के समय ये कार्मिक अनुशासन, प्रशिक्षण, समर्पण एवं संपूर्ण छवि की दृष्टि से उत्कृष्ट होते हैं।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) ने सैन्य बलों के कार्मिकों के वृत्ति–उन्नयन एवं शैक्षिक उत्थान के मार्ग को सुगम बनाने के लिए एक योजना विकसित की है। योजना, इन कार्मिकों के संबद्ध प्रशिक्षण संस्थानों/स्कूलों/अधिष्ठानों में उनके द्वारा प्राप्त सेवारत प्रशिक्षण/पाठ्यक्रमों को मान्यता देते हुए और स्नातक उपाधि कार्यक्रम के अंतिम वर्ष में इन्हें ऊर्ध्वाधर गतिशीलता की अनुमति देते हुए तैयार की गई है। चूँकि अधिकतर रक्षा कर्मी 35 से 45 वर्ष की आयु में सेवानिवृत्त हो जाते हैं, इसलिए उम्र के ऐसे मोड पर इन्हें प्राप्त स्नातक की उपाधि, इन्हें जीवन में आगे एक नये रोजगार की ओर रुख करने में इनके लिए सहायक होगी।

हमारे इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना है कि इग्नू उपाधि, इन्हें रोजगार के अवसर प्राप्त करने, समाज में अपनी स्थिति को बेहतर बनाने और रक्षा कर्मियों की शैक्षणिक सक्षमताओं को बेहतर बनाने में, इनके लिए कैसे सहायक होगी। हमारा यह अध्ययन यह पता लगाने के नजरिए से भी जरूरी था कि इग्नू से सिविल उपाधि की प्राप्ति कर रक्षा कर्मियों को क्या लाभ होगा और इसका इनके सेवानिवृत्ति से पहले और बाद के जीवन पर क्या प्रभाव होगा।

**शब्दावलीः** सशक्तीकरण, श्रमशक्ति, नौकरी बाजार